Department :- Ayurved Samhita & Siddhant

Topic :- क्षणभंगुरवाद एवं अनेकान्तवाद

क्षणभंगुरवाद

- क्षणभंगुरवाद निरात्मवादी बौद्ध दर्शन का सिद्धान्त हैं|

  “सर्वं क्षणिकं क्षणिकं”

  अर्थात् संसार में जो कुछ भी हैं, वह क्षण-क्षण में परिवर्तनशील हैं|

- प्रत्येक वस्तु तीन क्षण तक स्थाई होती हैं| इसका तात्पर्य हैं कि- प्रत्येक वस्तु एक क्षण में उत्पन्न होती हैं, दूसरे क्षण में वह स्थित रहती हैं तथा तीसरे क्षण में उसका विनाश हो जाता हैं|

- जिस प्रकार एक ही व्यक्ति बाल्यावस्था, युवावस्था और वृद्धावस्था में भिन्न नहीं माना जाता, उसी प्रकार वस्तु की उत्पत्ति, स्थिति और विनाश की परम्परा निरंतर चलती रहती हैं|

- कार्य- कारण की परम्परा सतत गतिशील प्रवाह की तरह हैं| कारण द्रव्य कार्य को उत्पन्न कर दूसरे ही क्षण नष्ट हो जाता हैं|

- प्रतिक्षण नष्ट होने के कारण किसी भी वस्तु का स्थायित्व नहीं हैं| इसी को क्षणभंगुरवाद या निरात्मवादी कहते हैं|

- निरात्मवादी बौद्ध 24 तत्व ही स्वीकार करते हैं| निरात्मवादी होने से पच्चीसवां तत्व पुरुष (आत्मा) को स्वीकार नहीं करते |हैं|

चरक संहिता में क्षणभंगुरवाद

"न ते ततसदृशास्त्वन्ये पारम्पर्यसमुत्थिता: |
सारूप्याद्ये त एवेति निर्दिश्यन्ते नवा: नवा: ||
भावास्तेषा समुदयो निरीश: सत्त्वसंज्ञक: |
कर्ता भोक्ता न स पुमानिनिति केचिद्व्यवस्थिता: ||"

(च.शा.1/46-47)

अर्थात् जो भाव पदार्थ इस सृष्टि में हैं वे सदैव विद्यमान नहीं रहते , बल्कि परम्परा के अनुसार क्षण-क्षण में उत्पन्न होकर दूसरे क्षण में स्थित रहने के बाद तीसरे क्षण में नष्ट हो जाते हैं|

भाव पदार्थों के स्थान पर दूसरे नूतन भाव उत्पन्न होते हैं, जिनका रूप पूर्व भाव पदार्थ के सदृश होता हैं| यह परम्परा सृष्टि में अबाध रूप से चलती रहती हैं| अत: क्षणभंगुरवाद मानने वाले आत्मा के कारणत्व को स्वीकार नहीं करते हैं|

- तेषामन्यैः कृतस्यान्ये भावा [१] भावैर्नवाः फलम्| भुञ्जते सदृशाः प्राप्तं यैरात्मा नोपदिश्यते||४८||
- Those who subscribe to the above theory do not accept the soul as the cause or reason for existence. To them, the results of actions performed by one would be enjoyed by some other similar (momentary) entities. [48]
- करणान्यान्यता दृष्टा कर्तुः कर्ता स एव तु| कर्ता हि करणैर्युक्तः कारणं सर्वकर्मणाम्||४९||
- The bodily organs of a living being might be different but the soul i.e. the agent of action (deeds) is one and the same. The agent (doer) of action (deed) like a sculptor is an efficient cause of all actions (viz. sculpture etc.) by virtue of his possession of the various *karana* (equipment). [49]
- निमेषकालाद्भावानां कालः शीघ्रतरोऽत्यये| भग्नानां न [१] पुनर्भावः कृतं नान्यमुपैति च||५०||

मतं तत्त्वविदामेतद्यस्मात्तस्मात् स कारणम्| क्रियोपभोगे भूतानां नित्यः पुरुषसञ्ज्ञकः||५१||

- Physical elements can get destroyed at a rate faster than the twinkling of an eye. Those destroyed do not come back to their original form again and the results of the deeds (like *yagna*) of one individual may not be enjoyable to another individual. The learned are, therefore, of the view that there is a permanent entity known as Purusha (soul) who is the causative factor for the action as well as for the enjoyment of the result of deeds. [50-51]
- अहङ्कारः फलं कर्म देहान्तरगतिः स्मृतिः| विद्यते सति भूतानां कारणे देहमन्तरा||५२||
- In living beings, a factor other than the body (i.e. the soul) is responsible for ego, enjoyment of the result of deeds, engagement in deeds, transmigration from one body to another body, and keeping the memory of the individual alive. [52]

निरात्मवाद का खण्डन

- कर्ता की कार्य करने की सामग्रीयाँ, साधन तो अनेक हैं परन्तु कर्ता एक ही होता हैं| जब आत्मा कारण से युक्त होता हैं तब वह सभी कर्मों का कारण होता हैं| अत: किसी कार्य की उत्पत्ति स्वत: न होकर सहेतुक होती हैं| क्योंकि कारण के बिना कार्य की उत्पत्ति नहीं होती हैं|

- जब शरीरादि भावों का नाश हो जाता हैं, तो पुन:नष्ट भावों की उत्पत्ति नहीं होती| अपने द्वारा कृतकर्मों का फल अन्य प्राप्त नहीं करता हैं| अत: प्राणियों की क्रिया में और उसके फल भोगने में चेतना धातु कारण हैं|

- इस प्रकार आयुर्वेद में स्वत: क्षणभंगुरवाद को स्वीकार न कर क्रिया व क्रियाफल को सहेतुक माना गया हैं|

अनेकान्तवाद

- अनेकान्तवाद का तात्पर्य अनेक प्रकार के मतों को प्रकाशित करना या अनेक मतों का होना हैं|

- यदि किसी एक विषय पर विभिन्न आचार्यों के विभिन्न मत उल्लिखित किये जाते हैं तो इस स्थिति में जब किसी एक मत पर स्थिर न होकर एक से अधिक मतों की मान्यता होती हैं, तो उसे अनेकान्तवाद कहा जाता हैं|

आयुर्वेद में अनेकान्तवाद

- आयुर्वेद में अनेकान्त वाद का व्यवहार अत्यल्प रूप में ही मिलता हैं क्योंकि आयुर्वेद में जहाँ भी अनेकान्तवाद की स्थिति उत्पन्न हुई हैं वहाँ आचार्यों द्वारा निश्चयात्मक निर्णय लेकर उस अनेकान्तवाद का निराकरण कर दिया गया हैं|

"मृदुतीक्ष्णगुरूलघुस्निग्धरूक्षोष्णशीतलं |
वीर्यमष्टविधं केचित केचिद द्विविधमास्थित: ||"

(च.सू.26/64)

कुछ लोग दो वीर्य एवं कुछ आठ वीर्य मानते हैं परन्तु इसका निराकरण न कर अनुमत तंत्रयुक्ति से इसे स्वीकार किया गया हैं| यह अनेकान्तवाद हैं|

- अनेकान्तवाद में निम्न प्रमुख विषय हैं-

1. वीर्यवाद- द्विविध, षड्विध, अष्टविध व दशविध|
2. मन का स्थान- सिर व हृदय |
3. क्लोम- पित्ताशय, ग्रसनिका व अग्न्याशय |
4. प्रभाव आदि|

धन्यवाद